Dukh Sukh Paakar Ke Jo | By Kumar Narendra |

रोटा क्यों है तू कांवड़िया
रुक मत तू चलता चल
शिव गौरा तेरे साथ में
चलेंगे हर पल-पल

दु:ख-सुख पाकर के जो
कांवड़ को उठाते हैं
आकर के स्वयं शंकर
उन्हें गले लगाते हैं
दु:ख-सुख पाकर के जो
कांवड़ को उठाते हैं

ॐ नमः शिवाय
ॐ नमः शिवाय

लंबा रास्ता होता
बड़ी दूर होती मंज़िल
मन काँपने लगता है
जीवन लगता बोझिल
सब बम-बम कहकर के
शक्ति पा जाते हैं
आकर के स्वयं शंकर
उन्हें गले लगाते हैं
दु:ख-सुख पाकर के जो
कांवड़ को उठाते हैं

ॐ नमः शिवाय
ॐ नमः शिवाय

हो जाते पैर ज़ख्मी
फिर भी न रुकते हैं
सर्दी, गर्मी, बरखा के
आगे न झुकते हैं
वो कैसे झुक जाएँ
जिन्हें शिव ही चलाते हैं
आकर के स्वयं शंकर
उन्हें गले लगाते हैं
दु:ख-सुख पाकर के जो
कांवड़ को उठाते हैं

ॐ नमः शिवाय
ॐ नमः शिवाय

शिव की महिमा का कोई
पार न पाया है
दिल्ली कांवड़ संघ ने शीश
चरणों में झुकाया है
कुमार कहे चरणों में

जो शीश झुकाते हैं
आकर के स्वयं शंकर
उन्हें गले लगाते हैं
दु:ख-सुख पाकर के जो
कांवड़ को उठाते हैं

ॐ नमः शिवाय
ॐ नमः शिवाय

https://bhaktivandana.com/lyrics/dukh-sukh-paakar-ke-jo-by-kumar-narendra/